वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 141

मृत्युंजय पूजा विधान

—: लेखिका : —

परम विदुषी पू. आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

चतुर्थ संस्करण **मूल्य**

2200 प्रति **8.00**

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती मातजि

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 1992	द्वितीय संस्करण 1999	तृतीय संस्करण 2001
2200 प्रतियाँ	2200 प्रतियाँ	2200 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

मृत्युञ्जय पूजा विधान

मंगलाष्टक

(हिन्दी पद्यानुवाद)

–मुक्तक छंद–

श्री नम्रदेवगण इन्द्र मुकुट मणि से
शोभित पद नख रविजो।
शास्त्र समुद्र बढ़ाने में नित,
चन्द्र स्वरूप हैं सुस्थित जो।।
अर्हंत सिद्ध आचार्य युक्त,
अरु उपाध्याय जो साधु खरे।
योगि जनों से वंदित होकर,
पाँचों गुरु मंगल को करें।।1।।

सुदर्शन बोध चरण निर्मल,
ये ही पवित्र रत्नत्रय हैं।

मुक्ति श्री नगरी के अधिपति,
ऐसे जिननाथ अभय-प्रद हैं।।
शिवपद जिनधर्म जिनागम,
औ जिन चैत्य जिनालय पूर्ण भरें।
लक्ष्मी युक्त सुशोभित होकर,
ये सर्व हमें कल्याण करें।।2।।

वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर,
ये तीन लोक विख्यात हुए।
श्री भरतेश्वर आदि द्वादश,
जो चक्रवर्ति श्रीमंत हुए।।
नारायण प्रतिनारायण सब,
बलभद्र सभी सतबीस मिले।
जो त्रेसठ पुरुष त्रिकाल सिद्ध,
ये सर्व हमें मांगल्य करें।।3।।

श्री विजयादिक अष्ट देवियाँ,
अरु विद्यादिक द्विगुण कहें।
श्री तीर्थंकर के मात पिता,
अरु यक्ष यक्षिणी शोभ रहें।।
बत्तीस इन्द्र औ तिथी देवता,
दिक्कन्यायें अष्ट मिले।
दश दिग्पालक सर्व देवगण,
ये नित्य हमें मांगल्य करें।।4।।

जो सर्वौषधि ऋद्धि धारक,
अरु तप वर्धित ये पंच लहें।
महा निमित्त अष्टांग निपुण,
अरु चारण अष्ट प्रकार कहें।।
पंच ज्ञानधारी त्रय बलयुत,
बुद्धि ऋद्धि नायक सगरे।
ये शत विश्व पूज्य श्री ऋषिगण,
सदा मेरे मंगल को करें।।5।।

श्री अष्टागिर पर ऋषभदेव,
अरु पावापुर महावीर जी।
श्री चम्पापुर में वासुपूज्य,
निर्वाण भूमि कहें जिनवर जी।।
अरु तीर्थंकर सम्मेदशिखर,
पर सिद्ध भूमि है कहे नरे।
ये सुप्रसिद्ध वैभव शाली,
जो सदा हमें कल्याण करें।।6।।

है ज्योतिष व्यंतर भवन कल्प गृह,
अरु मेरु कुल पर्वत पर।
श्री जम्बू शाल्मलि चैत्य वृक्ष,
वृक्षारगिरी रूप्याचल पर।।
जो इष्वाकार व कुण्डलगिरि,
नन्दीश्वर मनुषोत्तर सगरे।
सब चैत्यालय हैं जहाँ जहाँ पर,
सभी हमें मांगल्य करें।।7।।

जिनवर गर्भ कल्याणक और,
सुजन्म कल्याणक महोत्सव जो।
श्री तप कल्याणक उत्सव और,
सु केवल ज्ञान महोत्सव जो।।
व मोक्ष कल्याणक उत्सव जो,
देवों ने सभी मनाय चलें।
ये पंच हि कल्याणक सुखदा,
जो सदा हमें मांगल्य करें।।8।।

ऐसे सौभाग्य सुवैभव प्रद,
श्री जिनवर मंगल अष्टक को।
जो बुध जिन कल्याणक उत्सव,
अरु उषाकाल इस मंगल को।।
प्रति दिन पढ़ते अरु सुनते हैं,
धर्मार्थ काम युत सज्जन दो।
दुख रहित स्वर्ग लक्ष्मी पाकर,
फिर मोक्ष तु लक्ष्मी पाते वो।।9।।

इस प्रकार मंगल अष्टक को,
गुरु भक्तिवश अनुवाद किया।
जो दीक्षा गुरु के आशिष से,
मम आगम के अनुकूल किया।।
जिसको पढ़कर के भव्य जीव,
शुभ शीघ्र पुण्य का बंध करें।
'अभयमती' निज में ही रमकर,
नित शिवपुर में आवास करें।।10।।

नवदेवता पूजन

– गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहां मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।नव.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।नव.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं।।नव.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।नव.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।नव.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

–सोरठा–

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल –हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

– दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः।।

समुच्चय पूजा

– दोहा –

देव शास्त्र गुरु रत्नत्रय, बीस तीर्थंकर भान।
अरु सिद्धों को नमन कर, आह्वानन विधि ठान।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्री अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्री अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्री अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

करूँ चरणन प्रभु जल धारा, हरूँ रोग शोक दुख सारा।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।टेक.।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

काश्मीरी चंदन लाऊँ, प्रभु अर्चन कर सुख पाऊँ।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शुभ फेन सदृश तंदुल ले, धरूँ पुंज अक्षय पद धर ले।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेजा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

मंदार जुही शुभ माला, प्रभु भजूँ मदन निरवारा।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

व्यंजन रस थाल संवारा, जजूँ जिनवर भूख निवारा।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दीपक की ज्योति जगाऊँ, अज्ञान तिमिर विनशाऊँ।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

वर धूप प्रभू ढिग खेऊँ, सब कर्म कलंक नशेऊँ।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

फल अनन्नास बहु लाऊँ, शिव सुख हितु भेंट चढ़ाऊँ।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुविद्यमानविंशतितीर्थंकरे श्री अनन्तानंतसिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

नीरादिक अर्घ्य चढाऊँ, परमात्म परम पद पाऊँ।
जिन श्रुत गुरु बीस जिनेशा, हम भजूँ सिद्ध परमेशा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

आतम रूप समुद्र में बहे ज्ञान की धार,
शांतिधारा करत ही शांति मिले अपार।
आत्म रूप उद्यान में ज्ञान कली खिल जाय,
भक्ति सुमन अर्पण करूँ मनवांछित फल पाय।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

–सोरठा–

जिन श्रुत गुरु जिन बीस तीर्थंकर भाऊँ सदा।
सिद्ध अनंतानंत, गाऊँ गुण जयमालिका।।

–शेर छंद–

जय जय श्री अरिहंत समोससर्ण में लसें।
छयालिस गुणों से युक्त, सर्व घातिया नशें।।
जो तीन काल तीन लोक में सुशोभते।
ज्ञाता सुदृष्टा बनके, निज स्वरूप खोजते।।1।।

सर्वज्ञ कथित धर्म द्वादशांग मय वाणी।
निर्दोष नय प्रमाण युत मुक्ति की निशानी।।

अरु सप्त तत्व सप्त भंग भेद विज्ञानी।
अंजन से निरंजन करे भवि संत सुख दानी।।2।।

तेरी है दिव्य वाणी सदा भव्य सुखकरी।
मिथ्यात्व महामोह कर्म सर्व दुख हरी।।
स्याद्वाद अनेकान्त मयी वाणी बखानी।
माता सरस्वती नमूँ त्रैलोक्य जिनवाणी।।3।।

आरंभ परिग्रह रहित, विषयों से है परे।
निर्ग्रंथ दिगम्बर ऋषी, जन जन का मन हरे।।
तारण तरण जिहाज, गुरु के जो शरण पड़े।
वो संत शीघ्र दुःखमय संसार से तिरे।।4।।

आचार्य उवज्झाय अरु साधु महा मुनी,
जो रत्न त्रिवेणी सहित अरु मूल गुणधनी।।
सबको नमूँ जो ज्ञान रसिक आत्म विहारी,
संकल्प विकल्पों रहित शिवपंथ प्रचारी।।5।।

जिन बीस तीर्थंकर विदेह में सदा लसें।
नशें शेष अघाती करम शिव धाम में बसें।।
अरु आठ वर्ष मांहि केवलज्ञान तप लहें।
शाश्वत सहज सुख प्राप्त, आतमपुर में ही रहें।।6।।

अरु सिद्ध अनंता अनन्त सिद्ध भूमि में।
बाधा न हो किसी से रहते एक जगह में।।
इनके गुणों का पार कभी पा न सकूँ मैं।
इन पंच परम गुरु को नित वंदूँ त्रिकाल में।।7।।

–घत्ता–

जय परमानंदन, पापनिकंदन,
भवभयभंजन सुखकारी।
जिनश्रुत गुरु वंदन,
सिद्ध निरंजन ''अभयमती'' नित शिरधारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमान विशति तीर्थंकरेभ्यो श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

निज में ही लवलीन निज के ही गुण में सजूँ।
निज का होय विकास, पंच परम गुरु को भजूँ।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पंच बालयती तीर्थंकर पूजा

– दोहा –

वासुपूज्य मलि नेम अरु, पार्श्व प्रभू अति वीर।
पंच बालयति कामजित्, पूजूँ नित्य सुधीर।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चौपाई आंचलीबद्ध (15 मात्रा)

कंचन झारी जल भर लाय, प्रभु चरणन में धार कराय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पांचों बालयती सुखदाय, वंदूँ मन वच तन उद लाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घिस प्रभु चरण लगाय, भव आताप तुरत मिट जाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पांचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

तन्दुल पुंज अखण्ड चढ़ाय, क्रम क्रम से अक्षय पद पाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पांचों बालयती सुखदाय, वंदूँ मन वच तन उद लाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

विविध सुगंधित पुष्प चढ़ाय, काम बाण जब शीघ्र नशाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पाँचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं...।

नेवज बहु पकवान बनाय, प्रभु अर्पण कर भूख मिटाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पाँचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

घृत भर शुद्ध सुदीप जलाय, करत आरती मोह नशाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पाँचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

शुद्ध धूप चंदन की लाय, खेय प्रभू ढिग कर्म उड़ाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पांचों बालयती सुखदाय, वंदूँ मन वच तन उद लाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भांति भांति के फल मंगवाय, प्रभु को अर्पण कर शिव पाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पाँचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

वसुविधि द्रव्य सु अरघ बनाय पूजन कर प्रभु शांति लहाय।
महा सुख होय, जय जय नाथ परम सुख होय।।
पाँचों बालयती.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती, तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

–बेसरी छंद–

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, ज्ञाता दृष्टा हित उपदेशी।
अलख निरंजन भव भयहारी, सभी जिनेश्वर को उरधारी।।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

जयमाला

–दोहा–

बाल ब्रह्मचारी भये, पाँचों श्री ऋषिराज।
गाऊँ तव जयमालिका, आत्म सिद्धि के काज।।

–चौपाई–

जय जय वासुपूज्य जिनदेव, जगत्पूज्य तुमरी कर सेव।
सोलह स्वप्ने देखे मात, तीर्थंकर जनमे हो ठाठ।।1।।

हर्ष कियो दम्पतिपुर आन, याचक दान दियो बहु शान।
पन्द्रह मास रत्न वर्षाय, इन्द्र मेरु पर न्हवन कराय।।2।।

कोई इन्द्र सुचमर ढुराय, कोई नृत्य करें मन माय।
कोई ताल मृदंग बजाय, कोई प्रभु का यश गुण गाय।।3।।

दीक्षा ले प्रभु कर्म नशाय, केवलज्ञान तुरत प्रगटाय।
सर्व कर्म नश गुण दर्शाय, सिद्ध शिला पहुँचो शिर नाय।।4।।

मल्लिनाथ हैं योद्धार सूर, तप कर घोर करम चकचूर।
लौकांतिक सुर प्रभु गुण गाय, सिद्धपुरी लहँ हम शिर नाय।।5।।

नेमिनाथ स्वामी महाराज, जीतो काम सुभट निजकाम।
छप्पन कोटि रहे यदुवंश, खूब बरात सजो श्रीमन्त।।6।।

मायाचारि कियो श्रीकृष्ण, झट वैराग्य धरो भगवंत।
जग स्वारथ लख संयम धार, कर्म नाश शिव लहँ तत्काल।।7।।

बनी आर्यिका राजुल सती, है विचित्र कर्मों की गती।
तप कर घोर स्वर्गपुर जाय, स्त्रीलिंग छिदो सुर पाय।।8।।

चिंतामणि श्री पार्श्व जिनन्द, आत्म ब्रह्म में रमत सुनंद।
नाग नागिनीद मरत बचाय, णमोकार का मंत्र सुनाय।।9।।

स्वर्गपुरी पहुँचो है शीघ्र, हो धरणेन्द्र पद्मावती वीर।
झटकर दोनों प्रभु उपकार, दूर उपसर्ग कियो तत्काल।।10।।

संयम धर प्रभु ध्यान लगाय, कर्म नाश कर शिवपुर जाय।
महावीर सन्मति अति वीर, वर्द्धमान स्वामी गुण वीर।।11।।

कुण्डलपुर में जन्म मनाय, मेरु शिखर अभिषेक कराय।
माता त्रिशला पितु सिद्धार्थ, पुरजन परिजन हर्ष मनात।।12।।

क्रम क्रम से यौवन में आय, ब्याह हेतु नगरी सजवाय।
उदासीन हो श्री महावीर, संयम धर आतम रत धीर।।13।।

कर्म नाश शिवपुर को जाय, ज्ञाता दृष्टा श्री जिनराय।
तुम गुण गणिपति पारनपाय, प्रभुतव चरण शरण में आय।।14।।

– घत्ता छन्द –

पाँचों तीर्थंकर ब्रह्मचर्य धर, असिधारा कर बालयती।
मैं निशदिन ध्याऊँ, शीश नमाऊँ ध्यान लगाऊँ 'अभयमती'।।15।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयती तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः पूर्णर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

– सोरठा छंद –

आत्म ब्रह्म में लीन, पाँचों ऋषिवर संत जी।
जो भवि कीजे ध्यान, वे भवसागर से तिरे।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाजलिः।

।। इत्याशीर्वादः।।

मृत्युंजय विधान

।। मंगलाचरण।।

– मुक्तक छन्द –

जो भव्य प्राणि रूपी सुकुमुदनी को, विकसित नित शीघ्र करें।
वह सहज भयंकर दोष मेघ, रूपी कलंक को दूर करे।।
अरु कोष वाङ्मय न्याय रूप, किरणों का नित्य प्रकाश करे।
ऐसे चन्द्रप्रभ मेरे मन को, झट पवित्र कर क्लेश हरे।।

(यंत्र बनाने की विधि तथा बीजाक्षरों का वर्णन)

बिंदु सहित झं के सुमध्य में वरं कुरु कुरु होम लिखे।
वर पद को अर्हं सहित झं वं व्हः पः हः आदि लिखे।

(सामुदायिक प्राणि प्रतिष्ठा मंत्र)

ॐ आँ क्रों ह्रीं असिआउसा य र ल व श ष स ह अमुक पूजकस्य प्राणा अमुक जीवस्य इह स्थिताः। अमुक मृत्युञ्जय यंत्र मंत्र तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि काय वाङ्ः मनः चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवायान्तु। अत्र सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहाः।

यह दश प्राण यंत्र पर नव बार पुष्पांजलिं क्षेपण करें।

प्रत्येक प्राण प्रतिष्ठा यत्रं

ओं ह्रीं क्रों अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः कम्ल्व्र्यूं परमात्मने नमः।। ओ हं सः क ख ग घ ङ ओं ह्रां णमो अरहंताणं क्षम्ल्व्र्यूं च छ ज झ ञ ओं ह्रीं णमो सव्व सिद्धाणं पम्ल्व्र्यूं जल-देवतायां प्राणाः। ट ठ ड ढ ण ओं ह्रूँ णमो आइरियाणं रम्ल्व्र्यूं अग्नि-देवतायां प्राणाः। त थ द ध न ओं णमो ह्रौं उवज्झायाणं स्म्ल्व्र्यूं वायु-देवतायां प्राणाः। प फ ब भ म ओं ह्रः णमो लोए

सव्वसाहूणं ह्यल्व्र्यूं आकाश देवतायां प्राणाः। ओं य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ। ओं णमो अर्हंत केवलिभ्यो इम्ल्व्र्यूं आनन्द देवतायां प्राणाः। जीवा इह स्थिताः। सर्वं यंत्र मंत्र तंत्र रूपेण दिव्य देहस्य अस्य पूजकस्य सप्त धातु रूपकायेन्द्रियाणि कायवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण जिह्वेन्द्रियाणि, सुरुचिरं सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहाः।।

।।सप्त बार गंध पुष्पाक्षताञ्जजिं क्षिपेत् ।।

सर्व चक्र से सहित दिव्य यह, चक्र रहे जिसमें सुखदा।
अरु रक्षादिक करने वाला, मृत्युजीत नाशे विपदा।।
मृत्यु विनाशक हेतु और सुख कारक जो है शांतिप्रदा।
ऐसे मृत्युञ्जय सुयन्त्र को मन वच तन से जजूँ मुदा।।1।।

अरु अकार बीजाक्षर मातृक, आदि सभा जिसमें सोहे।
सुप्रसिद्ध शुभ बीज मंत्र से, सहित सुमण्डल मन लोहे।।
अरु सुप्रसिद्ध पद मंत्रों से मैं, स्थापित झट करूँ सही।
ऐसा मृत्युञ्जय प्रसिद्ध शुभ, शुद्ध यंत्र अरचूँ नित ही।।2।।

सर्व रूप अपमृत्यु निवारण हेतु कहे गुरुदेव सदा।
अरु अभिष्ट फल देने वाला, सर्वश्रेष्ठ कल्याण प्रदा।।
नर देवेन्द्र आदि यह दिव्य, सुचक्र विभूति लहें सुखदा।
ऐसे मृत्युञ्जय सुयन्त्र को, मन वच तन से जजूँ मुदा।।3।।

भूत प्रेत राक्षस पिशाचगण इत्यादिक जो विघ्न करे।
उन विघ्नों का नाशक, अरु धनधान्य विभूति प्रदान करे।
शान्ति प्रदायक अरु सुखदायक, सर्व रोग को शीघ्र हरे।
ऐसे मृत्युञ्जय सुयन्त्र को, हम पूजें नित मोद भरे।।4।।

।।इति पठित्वा नमस्कारं कुर्यात्।।

समुदाय पूजा

– स्थापना (हरिगीतिका छंद) –

गंगा सु नीर समान निर्मल शुद्ध शीतल जल भरूँ।
निज आत्म शांतिक हेतु मृत्युञ्जय सुयन्त्र न्हवन करूँ।।1।।
आह्वान कर वसु द्रव्य लेकर कनक थाली में भरूँ।
पूजूँ सदा शुभ यंत्र मृत्युञ्जय अभी सब दुख हरूँ।।2।।

ॐ नमोअर्हते भगवते देवाधिदेवाय सर्व यंत्र मंत्र सिद्धि कराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झं वं ह्वः पाहः हं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः असिआउसा.....नाम धेयस्य सर्वापमृत्यु-विनाशनं कुरु कुरु मृत्युञ्जययन्त्राधिपते अत्रावतरावतर संवौषट् स्वाहा। अत्र आह्वाननम्। स्थापनं। सन्निधिकरणं।

– अष्टक – (ढाल सोलह कारण पूजा) –

रत्न झारि में नीर भराय, दिव्य यंत्र पर इसे चढ़ाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र महासुख होय।।
जन्म जरा मृत रोग नशाय, पूजूँ मृत्युञ्जय यन्त्राय।
महासुख होय जय जय यंत्र परमसुख होय।।1।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुम अरु कर्पूर मिलाय, दिव्य यंत्र पर इसे चढ़ाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र महासुख हो।।
मुक्ता सम शीतलता छाय, पूजूँ मृत्युञ्जय यन्त्राय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।2।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कीर्ति सी चमक लहाय, अक्षत पुञ्ज अखण्ड चढ़ाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
अक्षय पद की प्राप्ति कराय, पूजूँ मृत्युञ्जय यन्त्राय।
महा सुख होय जय जय यन्त्र परम सुख होय।।3।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भांति भांति के सुमन सजाय, अलि गुंजत शुभ पुष्प चढ़ाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
काम वासना शीघ्र नशाय, पूजूँ मृत्युञ्जय मन लाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र पर सुख होय।।4।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध रूप नैवेद्य बनाय, अमृत पिण्ड सरस फलदाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
क्षुधा रोग विध्वंस कराय, पूजूँ मृत्युंजय यन्त्राय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।5।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि रत्नों के दीप जलाय, आत्म ज्योति निज में प्रगटाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
मोह मिथ्यातम नाश कराय, पूजूँ मृत्युञ्जय यन्त्राय।
महासुख होय, जय जय यन्त्र परम सुख होय।।6।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर की धूप बनाय, शुद्ध सुगंधित अलि गुंजाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।

अष्ट कर्म जब शीघ्र नशाय, पूजूँ मृत्युञ्जय मन लाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।7।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस युत फल मङ्गवाय, द्राक्ष सुदाडिम श्रीफल लाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
शिवफल हेतु फल सु चढ़ाय, पूजूँ मृत्युञ्जय मन लाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।8।।

ॐ ह्रीं क्रों सर्वापमृत्युञ्जय कराय सर्व शान्ति कराय रक्षा मृत्युंजयाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य मय अर्घ चढ़ाय, स्वर्ग मोक्ष सुख भव्य लहाय।
महासुख होय, जय जय यंत्र परम सुख होय।।
जन्म जरा मृत रोग नशाय पूजूँ मृत्युञ्जय यन्त्राय।
महासुख होय जय जय यंत्र परम सुख होय।।

ॐ नमो अर्हते भगवते देवाधिदेवाय यंत्र मंत्र सिद्धि कराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झ्रौं बं पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असिआउसा.....नाम धेयस्य सर्व शान्तिं कुरु कुरु। तुष्टिं कुरु कुरु। सिद्धिं कुरु कुरु वृद्धिं कुरु कुरु समस्त क्षाम डामर भय विनाशनं कुरु कुरु। सर्व शान्ति कराय रक्षापमृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

डाकिनि शाकिनि भूत अरु, व्यन्तर ग्रह इत्यादि।
किन्नरादि कृत विघ्न हर, करे यंत्र सुख शान्ति।।

।।शांतिधारा।।पुष्पांजलिं।।

ॐ शांतिरस्तु समस्त व्याधि भीति विष नाशनमस्तु।
तुष्टि पुष्टि बलायु विभूति वर्धनमस्तु सततं वर यंत्रात्।।

।।इत्याशीर्वादः।।

मृत्युञ्जय स्तोत्र

– दोहा –

पूर्व कर्म कृत रोग अरु, उपसर्गादिक तन्त्र।
इनकी शांति के लिए, जजूँ मृत्युञ्जय यंत्र।।

– मुक्तक छंद –

इन्द्राज्ञा से कुबेर आकर, पन्द्रह मास रतन वर्षाय।
साढ़े तीन करोड़ रत्न शुभ, जिनवर आंगन में चमकाय।।
स्वप्न देखती माता सोलह, पुत्र गर्भ में शोभित आय।
छपन कुमारी सेवा करती, भक्ति भाव से मन हर्षाय।।1।।

गुप्त रूप जननी की सेवा, शचि ने आकर शीघ्र किया।
झ्झट प्रभु को ले इन्द्र को दीना, देव चतुर्विधि नमन किया।।
इन्द्र गोद ले ऐरावत पर, बैठ मेरु पर न्हवन किया।
अनुप भोग उपभोग जुटाकर, प्रभु गुण गा सब नृत्य किया।।2।।

लह विराग प्रभु यौवन में सब लौकान्तिक स्तुत गाये।
शीघ्र पालकी में बैठाकर, तप वन में प्रभु को लाये।।
सिद्धों को प्रभु नमस्कार कर, पञ्च मुष्टि से लोंच किया।
चेतन रस में लीन हुए प्रभु, सब मिल तप कल्याण किया।।3।।

सम्यक व्रत में उन्नति करके, संयम से परिपूर्ण लसे।
धर्म ध्यान बल युक्त मोह त्रय, आयु सप्त प्रकृती विनसे।।
क्षायिक दृष्टी आतप अरु चतु जाति व निद्रा तीन कषाय।
गति दो थावर सूक्ष्म उद्योत व साधारण अठ नशे कषाय।।4।।

वेद नपुंसक आदि खिपाकर हास्य आदि छह नवम खिपाय।
दसमें सूक्ष्म लोभ हटाकर बारह में निर्मोह कहाय।।
निद्रा प्रचला अन्त्य खिपाकर पञ्च विघ्न की प्रकृति नशाय।
शुक्ल ध्यान महिमा को गाकर अर्हन केवल ज्ञान लहाय।।5।।

हो शुक्ल ध्यान में प्रथम क्रान्ति एकत्व ध्यान में शान्ति रहे।
अरु प्रथम शुक्ल नहिं तीक्ष्ण तथा एकत्व वितर्क सुतीक्ष्ण रहे।।
शीघ्र घातिया कर्म खिपाकर केवल ज्ञानी तुरत लसे।
ज्ञाता दृष्टा बनकर प्रभुजी निज स्वरूप में गुण बिलसे।।6।।

मोह रहित निर्ग्रन्थ नाम धर यथाख्यात पदवी धरते।
दर्शन मोह गलाकर प्रथम हि पुनः मोह चारित्र नशे।।
वह एकत्व परम पद पाकर निज स्वरूप में लीन रहे।
बाहर भीतर नग्न रहे निर्ग्रन्थ राज मन खींच रहे।।7।।

परिग्रह तजे बिना नहिं मुक्ती यह तो लोक प्रसिद्ध रहे।
नन्त चतुष्टय गुण से भूषित गुण अतीन्द्रि मन मोह रहे।।
जीवन मुक्त कहे अरिहन्ता समवसरण में शोभ रहे।
प्रातिहार्य अठ चौतिस अतिशय द्वारा जगत प्रपूज्य हुए।।8।।

जन्मकृत्य अतिशय न देवकृत अतिशय से नित शोभ रहे।
चरण कमल में चिह्न सुहावे, भविजन का मन मोह रहे।।
यक्ष यक्षिणी सेवा में रत, भक्ति में नित लीन रहे।
शैशव में देवों से पूजित आत्मिक रस में भीग रहे।।9।।

तेरह से चौदह में आकर प्रकृति बहत्तर नाश करे।
चरम समय तेरह को क्षय कर, सिद्ध सिद्धालय प्राप्त करे।।

देह रहित हो कर विदेह सब आकृति सदा अमूर्ति लहे।
अरु अनन्त गुण के स्वामी हो, अठ प्रधान गुण शोभ रहे।।10।।

काया माया भय नहिं तेरे हम भगवन तव दास बने।
स्वतन्त्रता को तुमने पाया, पराधीन नहि शोभ हमें।।
समकित आदि गुणों से प्रेरित, पूर्ण ज्ञान में नित्य रमे।
मायामय तव देह रचाकर, मुकुटानल से उसे समे।।11।।

शीश चढ़ाने राख तुम्हारी चरण नमूँ आशिष तेरा।
हम पूजें संस्थापन करके, भक्ति भाव से गुण तेरा।।
''अभयमती'' मृत्युञ्जय का पद्यानुवाद कर शीश खरा।
निज के द्वारा निज को भज कर, निज में ही निज रूप धरा।।12।।

अवर्णादि बीजाक्षर पूजा

– सोरठा –

अ-वर्ण आदि सब बीज, अक्षर क्रम क्रम से जजूँ।
जल गन्धादिक शुद्ध, महा मंत्र से पूज हूँ।।

इति पठित्वा अवर्णादि बीजाक्षर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनार्थं पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

– अवर्ण पूजा (स्थापना) –

जटा मुकुट धारक द्विज कुल में जनित पुरुष भवि मन मोहे
अरु सुगन्ध चतुरानन स्वर्ण सु कुण्डल से नित ही सोहे।
लख योजन शुभ गन्ध सुवासित पूर्ण कर्मवत अङ्ग जजूँ।
इति अ-वर्ण का चिन्तन कर सब ऋद्धि सिद्धि के हेतु भजूँ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं कनक वर्ण चतुर्भुजालंकृत अवर्ण एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

स्वर्ण वस्त्र से आवेष्टित अरु, शस्त्र हाथ में शोभ रहे।
आभूषण से अङ्ग सुशोभित निज वाहन में तिष्ठ रहे।
सब ही विघ्न समूह निवारण के हेतू नित थाल सजूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से प्रतिदिन अ वर्ण को मैं पूजूँ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं हेम वर्णाय गज वाहनं चतुर्भुजालंकृताय अष्ट बाहु सहिताय अवर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इत्यादि, कर्म श्रेय के हित करूँ।
पूर्ण होत है शान्ति, मोह मयी भ्रम को हरूँ।।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं महामेरु सदृश अ वर्ण.....नाम-धेयस्य सर्व शान्तिं विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा, पुष्पांजलिं (इति अवर्ण पूजा)।

– अकारस्य लक्षण –

वृत्तासनं, गजवाहनं, हेम वर्णं, कुंकुम गंधलवण स्वादुँ।
जम्बूद्वीप विस्तीर्णं चतुर्मुखं, अष्टबाहुँ, कृष्णलोचनं।
सित वर्णं, मौक्तिकामरणं, जटा मुकुट धारिणं।
अति बलि गंभीरं पुल्लिंग मृत्युनाशनं।

।। ध वर्ण पूजा ।।

चतुर्भुजा विद्रुम तन भूषित, दीर्घ काल तक शोभ रहे।
त्रय लोचन से सहित व गुग्गुल तनु वासित मन मोह रहे।।
कृष्णानन से सहित वशीकर हेम समान सुप्रभा लहे।
ऐसे गुण से युक्त भूत हर शुद्ध 'ध' कार नमूँ नित मैं।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्वाभूषण भूषित ''ध'' वर्ण अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो.।।2।।

स्वर्ण वस्त्र से नित्य सुशोभित, शस्त्र हाथ में लिए हुए।
गुण से भूषित अङ्ग सदा निज, वाहन में ही सुखी हुए।।
सब ही विघ्न निवारण हेतू, मन वच तन से नित्य जजूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से मैं नित्य ध वर्ण को शुद्ध भजूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्वाभरण भूषित षष्ट भुजा सहिताय ''ध'' वर्णाय अर्घ्यं।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इति कर्म, मोक्ष प्राप्ति के हित करूँ।
पूर्ण शांति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महामेरु सदृश धवर्ण.....नाम धेयस्य सर्व शान्ति विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा पुष्पांजलि (इति ध वर्ण पूजा)।

– श्रकारस्य शक्ति –

कषाय, वर्णं, त्रिनेत्रं, चतुरायत योजन विस्तीर्णं, रौद्रकार्य कारणं। षट् भुजं, चक्र, पाशं, गदा, मुमुंडि मूसेल वज्र सराशनायुधे, कृष्ण वर्ण, कृष्ण सर्पं यज्ञोपवीतं जटा मुकुट धारिणं। हूँकार सर्व महाननाद, महाशूरं, कठोरं, धूम्र प्रियं, रौद्र दृष्टि नैऋत्य देवतं। सूर्य बीजे, जय सुख करे।

।। ठवर्ण पूजा ।।

– वीर छंद –

शत योजन विस्तीर्ण और जो, चन्द्र किरण सम स्वच्छ रहे।
विप्र त्रिअंबक गंध युक्त सत्, केतु रक्ताम्बर पाप जहे।
मोर गमन श्वेतांग पुरुष, पाशांकुश आदिक शस्त्र गहे।
विघ्न विनाशक भव भय नाशक जजूँ ठ वर्ण सुबुद्धि लहे

ॐ आं क्रौं ह्रीं शशिधर वर्ण शशि चूड़ामणि किरीटालंकृत ''ठ'' वर्ण अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

– वीर छंद –

हेम वस्त्र से शोभित सुन्दर, शस्त्र हाथ में नित्य लसे।
गुण से भूषित अङ्ग सुशोभित, निज शुभ वाहन में तिष्ठे।
सर्व विघ्न नाशक कारण मैं त्रिकरण से नित ही प्रणमूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से मैं, जजूँ 'ठ' वर्ण कुकर्म हनूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्ताम्बराभरण भूषिताय ''ठ'' वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा छंद –

इति आह्वानन कर्म, मोक्ष हेत नित ही करूँ।
सर्व शांति को प्राप्त, निज गुण को निज में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शशिधर वर्ण मयूर स्थित टवर्ग द्वितीय स्थानं ठ वर्णाय द्वितीय स्थानं स्थित ठ बीज.....माम धेयस्य सर्व शांति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलि।। इति "ठ" वर्ण पूजा।।

– ठकारस्य शक्ति –

चतुरस्त्रासनं, गजवाहनं, शंख सलिभे द्विभुजं, वज्र गदायुधे, जम्बूद्वीप प्रमाणं, अमृत स्वादे रक्षा स्तंभनं, मोहनं, कार्य सिद्धि करं सर्वाभरण भूषितं, क्षत्रिय देवतं पुल्लिंग। चन्द्र बीजं विष मृत्यु नाशनं।

।। ह वर्ण पूजा ।।

– वीर छंद –

विभिन्न भांति के आभूषण से सज्जित होकर शोभ रहे।
मन प्रसन्न होकर पवित्र निज गुण में ही लवलीन रहे।
अरु स्तम्भित करने में निश्चित श्रेष्ठ निपुण निज शक्ति लसे।
उस "ह" वर्ण को पूजूँ निश दिन जिससे पाप समूह नशे।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं पुण्डरीक निभ वज्राभरण भूषित "ह" वर्ण एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कनक वस्त्र से सदा सुशोभित शस्त्र हाथ में लिए हुएं
सुन्दर अङ्ग सुशोभित अपने वाहन में ही अचल रहे।।

सब ही विघ्न विनाशक हेतू बीजाक्षर को सदा जजूँ।
नीरादिक बसु द्रव्यों से मैं नित "ह" वर्ण को शुद्ध भजूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पुण्डरीकनिभाय सर्वाभरणभूषिताय "ह" वर्णाय अर्घ्यं।

– सोरठा छंद –

आह्वानन सब कर्म, मोक्ष प्राप्ति के हित करूँ।
पूर्ण शांति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महामेरु सदृश धवर्ण.....नाम धेयस्य सर्व शान्ति विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा पुष्पांजलि (इति ध वर्ण पूजा)।

– श्रकारस्य शक्ति –

कषाय, वर्णं, त्रिनेत्रं, चतुरायत योजन विस्तीर्णं, रौद्रकार्य कारणं। षट् भुजं, चक्र, पाशं, गदा, मुमुंडि मूसेल वज्र सराशनायुधे, कृष्ण वर्ण, कृष्ण सर्पं यज्ञोपवीतं जटा मुकुट धारिणं। हूँकार सर्व महाननाद, महाशूरं, कठोरं, धूम्र प्रियं, रौद्र दृष्टि नैऋत्य देवतं। सूर्य बीजे, जय सुख करे।

।। ठ वर्ण पूजा ।।

– वीर छंद –

शत योजन विस्तीर्ण और जो, चन्द्र किरण सम स्वच्छ रहे।
विप्र त्रिअंबक गंध युक्त सत्, केतु रक्ताम्बर पाप जहे।
मोर गमन श्वेतांग पुरुष, पाशांकुश आदिक शस्त्र गहे।
विघ्न विनाशक भव भय नाशक जजूँ ठ वर्ण सुबुद्धि लहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शशिधर वर्ण शशि चूडामणि किरीटालंकृत "ठ" वर्ण अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

–वीर छंद–

हेम वस्त्र से शोभित सुन्दर, शस्त्र हाथ में नित्य लसे।
गुण से भूषित अङ्ग सुशोभित, निज शुभ वाहन में तिष्ठे।
सर्व विघ्न नाशक कारण मैं त्रिकरण से नित ही प्रणमूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से मैं, जजूँ 'ठ' वर्ण कुकर्म हनूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्ताम्बराभरण भूषिताय ''ठ''वर्णाय अर्घ्यं....।

–सोरठा छंद–

इति आह्वानन कर्म, मोक्ष हेत नित ही करूँ।
सर्व शांति को प्राप्त, निज गुण को निज में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शशिधर वर्ण मयूर स्थित टवर्ग द्वितीय स्थानं ठ वर्णाय द्वितीय स्थानं स्थित ठ बीज.....माम धेयस्य सर्व शांति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलि।। इति ''ठ'' वर्ण पूजा।।

–ठकारस्य शक्ति–

चतुरस्त्रासनं, गजवाहनं, शंख सलिभे द्विभुजं, वज्र गदायुधे, जम्बूद्वीप प्रमाणं, अमृत स्वादे रक्षा स्तंभनं, मोहनं, कार्य सिद्धि कर सर्वाभरण भूषितं, क्षत्रिय देवतं पुल्लिंग। चन्द्र बीजं विषय मृत्यु नाशनं।

।। ह वर्ण पूजा ।।

–वीर छंद–

विभिन्न भांति के आभूषण से सज्जित होकर शोभ रहे।
मन प्रसन्न होकर पवित्र निज गुण में ही लवलीन रहे।
अरु स्तम्भित करने में निश्चित श्रेष्ठ निपुण निज शक्ति लसे।
उस ''ह'' वर्ण को पूजूं निश दिन जिससे पाप समूह नशे।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं पुण्डरीक निभ वज्राभरण भूषित ''ह'' वर्ण एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कनक वस्त्र से सदा सुशोभित शस्त्र हाथ में लिए हुए।
सुन्दर अङ्ग सुशोभित अपने वाहन में ही अचल रहे।।
सब ही विघ्न विनाशक हेतू बीजाक्षर को सदा जजूँ।
नीरादिक बसु द्रव्यों से मैं नित ''ह'' वर्ण को शुद्ध भजूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पुण्डरीकनिभाय सर्वाभरणभूषिताय ''ह'' वर्णाय अर्घ्यं.....।

–सोरठा छंद–

आह्वानन सब कर्म, मोक्ष प्राप्ति के हित करूँ।
पूर्ण शान्ति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पुण्डरीकनिम्न सर्वाभरण भूषित हं बीज.....नाम धेयस्य सर्व शांति विधहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलि।।

–हकारस्य शक्ति–

सर्व व्यापि, सित वर्णं, सित गंध प्रियं, सित माल्यानुलेपनं, सितांबर प्रियं, सर्व कर्म कर्तारं सर्व मन्त्रगण पूजितं, महाद्युतिं, अनेक मुद्रायुधयुक्ति संपन्नं। चिंत गति मनस्व, योजितं, चिंतित मनोरथं, विकल्प सर्व देवं, महा कृष्टित्वं, अतीत अनागत वर्तमान त्रैलोक्य काल दर्शनं। सर्वश्रिया देवतं शिव बीजं दश सहस्र जपात् कार्य सिद्धि।

।। क्ष बीज पूजा ।।

–वीर छंद–

खड्ग खेट शुभ कमल वाण अरु मूसल आदि त्रिशूल कहे।
पाश धनुष शक्त्यंकुश अरु भुज सोलह वज्र संयुक्त लहे।

हेम अङ्ग अरु भानु सदृश शुभ तेज मुकुट से सहित जजूँ।
गरुडारूढ नृपान्वय स्थित, त्रिभुवन निलय 'क्ष' बीज भजूँ।

ॐ आं ह्रीं हेमवर्ण गरुड पृष्ठाधिष्ठित षोडशभुजालंकृत ''क्ष'' बीज एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

हेम वस्त्र से नित्य सुशोभित शस्त्र हाथ में लिए हुए।
अङ्ग विभूषित गुण से भूषित निज वाहन में तिष्ठ रहे।
सर्व विघ्न वारण हेतू मैं मन वच तन से नित्य जजूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से शुभ शुद्ध ''क्ष'' बीज सदैव भजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कनक वर्ण विभूषित ''क्ष'' बीजाय अर्घ्यं.....।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इत्यादि, कर्म श्रेय हित नित करूँ।
पूर्ण शान्ति को प्राप्त, धैर्य सहित उर मैं धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कनक वर्ण षोडश भुजालंकृत क्ष बीज.....नाम धेयस्य सर्व शान्ति विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा पुष्पांजलि। इति क्ष बीज पूजा।

– क्षकारस्य शक्ति –

पीतवर्णं, जम्बूद्वीपोध्यायं, ध्येयम् संख्यात द्वीप समुद्र व्यापक सुखं, अष्टबाहु वज्रपाश मूसल, गदा शंख चक्र हस्तं गजवाहिनि, चतुरस्त्रासनं, सर्वाभरणे भूषितं, जटा मुकुट धारिणं, सर्व लोक पूजितं, स्तंभनं, सुगंध माल्य प्रियं, सर्व रक्षाकरं, सर्व प्रियं, काल ज्ञान महेश्वरं, सकल मंत्र प्रियं, रुद्राग्नि देव पूजितं प्रियं। नृसिंहं बीजं दश सहस्र जपात् मृत्युनाशनं।

।। सकल स्वर पूजा ।।

– वीर छंद –

शुभ स्वर समूह निज स्थानक में रहे प्रशस्त महा सुखदा।
शरद्चन्द्र सम शांति विधायक सर्वश्रेष्ठ है कीर्ति मुदा।
दुष्ट कुग्रह के उच्चाटन में चतुर बीज अक्षर सुखदा।
सर्व स्वरों की स्थापन करके पूजूँ मन वच काय मुदा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्र वर्ण सर्वाभरण भूषित शाकिनी डाकिनी भूत व्यन्तर राक्षस ग्रह यथच्छेदन भदन ताडन मारण कर्म समर्थाक्षर सकल स्वर अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्व कार्य करने में जो यं (स्वर) बीजाक्षर शक्तीशाली।
सर्व व्याधि के नाश करन में जो हैं जन जन दुख हारी।
अरु भूतादिक मारि कृत्य सब विघ्न समूह नश भारी।
श्रेष्ठ सभी स्वर पूजूँ प्रतिदिन, जो है आतम सुखकारी।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्र वर्णाय सर्वाभरण भूषिताय शाकिनी डाकिनी भूत व्यन्तर पिशाच राक्षस ग्रहव्यूहच्छेदन भेदन ताडन कर्म समर्थाक्षरायसकल स्वराय अर्घ्यं।

– सोरठा –

इति आह्वानन कर्म, मोक्ष प्राप्ति के हित करूँ।
सर्व शान्ति को प्राप्त, आदरयुत उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ वर्ण सर्वाभरण भूषित शाकिनी डाकिनी भूत व्यन्तर पिशाच ग्रहच्छेदन ताडन कर्म समर्थाक्षर सकल स्वर.....नाम धेयस्य सर्व शान्तिं विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा पुष्पांजलिं। इति सकल स्वर पूजा।

।। ॐकार पूजा ।।

पद्मासन शुभ पद्म सदृश व सुगंध सहित नित ॐ लखे।
श्रेष्ठ वर्ण पांचो परमेष्ठी, युत परमात्म स्वरूप लसे।
कोटि चन्द्र रवि सम उज्ज्वल नित, सुन्दर देह स्वरूप जजूँ।
अरु अभीष्ट की सिद्धि हेतु ॐकार स्थापन कर पूजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पंच वर्णान्वित ॐकार बीज अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

शुभ्र समुज्वल चारु देह अरु अमृत शांत जिनेश जजूँ।
पंच ब्रह्ममय सर्व वदन ॐकार बीज मैं शुद्ध भजूँ।
सुख प्रसिद्ध अर्हन् मुखादि शुभ अक्षर मंत्र स्वरूप जजूँ।
जल आदिक ले अष्ट द्रव्य युत, पंच परमेष्ठी ॐ जजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं परमज्योतिः स्वरूपानन्तचतष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं.....।

– सोरठा –

आह्वानन विधि कर्म, आत्म शान्ति के हित करूँ।
पूर्ण शान्ति को प्राप्त, कांति सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं परमज्योति स्वरूपाान्तचतुष्टयात्मक ॐकार.....नाम धेयस्य सर्व शान्ति विधेहि स्वाहा। शान्तिधारा पुष्पांजलिं।

।। क्षीबीज पूजा ।।

यक्ष कुराक्षस अरु गंधर्वन् ब्रह्म कुराक्षस आदि सभी।
इनका मतर्दन करने वाला ''क्षी'' बीजाक्षर लहे जभी।

पृथ्वी मण्डल के सुमध्य में स्थित मैं नित ध्यान धरूँ।
'क्षी' बीजाक्षर स्थापन कर अरु पूजन कर सब पाप हरूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ''हेम वर्ण श्री'' बीज अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कनक वर्ण से सहित सदा ही शस्त्र हाथ में लिए हुए।
गुण से भूषित अङ्ग सुशोभित निज वाहन में तिष्ठ रहे।
सभी विघ्न के नाश हेतु मैं मन वच तन से यंत्र जजूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से मैं ''क्षी'' बीजाक्षर नित्य भजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय अर्घ्यं र्निपामीति स्वाहा।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इति कर्म, श्रेय हेतु मैं नित करूँ।
पूर्ण शान्ति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हेम वर्ण ''क्षी'' बीज.....नाम धेयस्य सर्व शान्ति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा, पुष्पांजलिं। इति क्षी बीज पूजा।

।। ल बीज पूजा ।।

स्तम्भादिक कार्य करने में जो ''ल'' है निपुण सुदक्ष सदा।
अरु जो लाख सुयोजन दीर्घ व हितकारक नहिं दुःख कदा।
क्षितिमण्डल के कोण मांहि नित, स्थित रहे 'ल' बीज यदा।
ऐसे शुद्धाक्षर 'ल' बीज को, स्थापन कर मैं भजूँ सदा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कनक वर्ण चतुर्भुजालंकृत ''बीज अत्र एहि एहि। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

स्वर्ण वस्त्र से सहित सदा ही शस्त्र हाथ में लिए हुए।
परम विभूषित अङ्ग सुशोभित, निजवाहन में सुखी हुए।
सब ही विघ्न समूह निवारण के हित शुद्ध स्वरूप जजूँ।
नीरादिक वसु द्रव्यों से मैं पुण्य सहित 'ल' बीज भजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ''ल'' बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इत्यादि, कर्म श्रेय के हित करूँ।
कांति शांति को प्राप्त, आदर युत उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महामेरु सदृश ''ल'' वर्ण.....नाम धेयस्य सर्व शांति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलिं। इति ल बीज पूजा।

– लकार शक्ति –

भू बीजं, भू लाभं, पीत वर्ण, चतुर्भुजं, वज्र चक्र शूल गदा आयुधं, गज वाहनं, स्तम्भन मोहन कर्तारं, जम्बूद्वीप विस्तारं, मदगन प्रियं महात्मानं, लोकालोक पूजित सर्व जीव धारिणं, चतुरस्त्रासनं पृथ्वीजयं इन्द्रदेवतं।

।। व बीज पूजा ।।

पूर्ण कलायुत कोमल काय, 'व' कांति सहित नित शोभित है।
अङ्ग विभूषित अरु महान निज, शक्ति सहित विभूषित है।
अरु अनन्त कार्यादिक करने में समर्थ शुभ बीज जजूँ।
शुभ सोलह पत्रों युत 'व' कार का स्थापन कर नित्य भजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं षोडश कला युक्त 'व' कार बीज अत्र एहि एहि संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विविध भांति के गुण रूपी निज, आभूषण से भूषित हैं।
सदा प्रफुल्लित खिले कमल सम मन प्रसन्न निज लीन रहे।
सर्व विघ्न की शांति हेतु मैं, मन वच तन से मंत्र जजूँ।
शुभ अकलङ्क 'व' कार बीज को, अष्ट द्रव्य से नित्य भजूँ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त ''व'' बीजाय अर्घ्यं.....।

– सोरठा छंद –

आह्वानन इत्यादि, मोक्ष प्राति के हित करूँ।
पूर्ण शान्ति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त व बीज.....नाम धेयस्य सर्व शान्तिं विधेहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलिं। इति व बीज पूजा।

– वकारस्य शक्ति –

श्वेत वर्णं, विंदु सहितं, मकरवाहनं, पद्मासनं, वश्याकर्षणं। निर्विष शांति करं, वरुणादि देवतं, ऋण बीजं, विष मृत्यु नाशनं।

।। र बीज पूजा ।।

कला पूर्ण अरु कोमल सुन्दर देह कान्ति युत शोभ रहे।
गुण से भूषित अङ्ग सुसज्जित, उग्र शक्ति मन मोह रहे।
अरु अनन्त करमादिक करने में समर्थ सब पाप हने।
सोलह पत्रों युत 'र' बीज स्थापन कर पूजूँ नित मैं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं षोडश कलायुक्त ''र'' कार बीज अत्र एहि एहि संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

तरह तरह के गुण रूपी निज, आभूषण से भूषित है।
खिले कमल सम हृदय प्रफुल्लित होकर जन मन मोहर रहे।

सर्व विघ्न की शांति हेतु, मन वच तन से शुभ मंत्र जजूँ।
अर नित सुन्दर 'र' बीजाक्षर को स्थापन कर नित्य भजूँ।
ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त ''र'' बीजााय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा छंद –

आह्वानन विधि कर्म, आत्म शान्ति के हित करूँ।
पूर्ण शांति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त ''र'' बीज.....नाम धेयस्य सर्व सर्व शांति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा पुष्पांजलिः।

इति र बीज पूजा

– र कारस्य शक्ति –

सर्व व्यापिं, द्वादशादित्यप्रभं, ज्वाला मालं, कोटि योजन द्युतिं, सर्व लोक कर्तारं, सर्व होम प्रियं, रौद्र शक्ति, स्त्रीणापञ्चसायिकं, पर विद्या छेदनं, आत्मकर्म साधनं, स्तंभन मोहन कर्त्तारं, जम्बूद्वीप विस्तारं, मेष वाहनं, त्रिकोण आसनं, अग्नि देवतं। अग्नेय बीजं उग्र कर्म कार्य कृतं।

।। फ बीज पूजा।।

कला पूर्ण कोमल सुन्दर तन, कांति सहित नित शोभ रहे।
अंग सुशोभित गुण से भूषित, महा शक्ति से युक्त रहे।।
अरु अनंत कार्यादिक करने में जो नित्य समर्थ रहे।
सोलह पत्रों सहित विशुद्ध ''फ'' बीज थाप कर पूजूँ मैं।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त ''फ'' बीज वर्ण बीज अत्र एहि एहि संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विविध भांति के गुण रूपी नित आभूषण से सज्जित है।
खिले कमल सम हृदय प्रफुल्लित जो निज में लवलीन रहे।।
सर्व विघ्न के शांति हेतु मन वच तन से नित्य जजूँ।
अरु ''फकार'' बीजाक्षर को मैं नीरादिक से शुद्ध जजूँ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं षोडश कलायुक्त ''फ'' वर्ण बीजाय अर्घ्यं....।

– छन्द सोरठा –

आह्वानन इत्यादि, कर्म मोक्ष के हित करूँ।
पूर्ण शांति को प्राप्त, धैर्य सहित उर में धरूँ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलायुक्त ''फ'' वर्ण बीज.....नाम धेयस्य सर्वशांति विधेहि स्वाहा। शांतिधारा। पुष्पांजलिं।

इति फ बीज पूजा

– फ कारस्य शक्ति –

विद्युत्तेज, पद्मासनं, सिंह वाहनं देश कोटि योजनायामं, तदार्द्ध विस्तारं द्विभुजे, परशुचक्रधरं, केतकी गंधं, सिद्ध विद्याधर पूजितं, मधुर स्वादं व्याधिविष दुष्ट ग्रह विनाशनं, सर्व महारतिं, महादिव्य शक्ति शांति करं, ईशान देवतं। विष्णु बीजं धन धान्य वर्धनं।

इति अवर्णादि बीजाक्षर पूजा विधान

।। अत्र मंत्र पुष्प ।।

(1) ॐ ह्रीं अर्हं झं वं ह्रः पः सः मम सर्वापरमृत्युजयं कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तर शत जपं कुर्यात्।
(2) ॐ जूं सः मृत्युंजयाय सर्वशांतिकराय नमः।

।। गंधोदक मंत्र ।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वापमृत्युञ्जय कारणाय सर्वयंत्र सिद्धिकराय ह्रीं द्री क्रौं ॐ ॐ ठः ठः अपमृत्युं घातय घातय आयुष्यं वर्धय वर्धय स्वाहा।

जयमाला

जय प्रथम जिनेश्वर, महि परमेश्वर जगत नरेश्वर सुखकारी।
जय नमित सुरासुर, सकल प्रभासुर, जय-जय भव भय दुखहारी।।
जय जय जिनेन्द्र आदिनाथ तुम विशाल हो।
जय जय अजित जिनेश देव भद्रसाल हो।।
जय जय हि संभवनाथ सर्व सौख्यकार हो।
जय नाथ अभिनंदन सदा आनंदकार हो।।1।।

जय जय सुमति व पद्म प्रभु देव जिनंदा।
जय जय सुपार्श्व चन्द्रप्रभु देव सु चंदा।।
जय पुष्पदंत शीतल जिन विश्व आनंदा।
श्रेयांस वासुपूज्य देव श्रेय के कदा।।2।।

जय जय विमल अनंत नाथ कर्म अरि हंता।
जय धर्म शांतिनाथ आत्म शांतिकर संता।।
जय जय जिनेश कुंथुनाथ विश्व के त्राता।
जय जय अरह सुनाथ करे भव्य सुख साता।।3।।

जय मल्लिनाथ कर्म मल्ल शीघ्र कर चूरन।
जय जय सुमुनिसुव्रत करें चारित्र व्रत पूरण।।
जय जय जिनेन्द्र देव नमि सुनाथ हित करण।
जय नेमिनाथ धर्मचक्र के हो तुम शरण।।4।।

जय पार्श्वनाथ नित रहे रक्षक व दुख हरण।
जय वर्द्धमान वीर महावीर श्री चरण।।
चौबीस जिनेश्वर को नमूँ आत्म हित करन।
जो भव समुद्र के सदा तारण हो अरु तरण।।5।।

चैतन्य भूत आत्म ज्योति रूपनिहारी
निर्विकल्प निर्विकार मुक्ति पंथसंचारी।
जो दर्शज्ञान सुख अनंत शक्ति के धनी
सर्वज्ञ वीतराग सुखद मार्ग दर्शनी।।6।।

ये सर्व तीर्थंकर हि सिद्ध भूमि ले लसें
सब दोष हर साक्षात् बिंबरूप में लखें।
धारूँ हृदय में भक्ति सहित शुद्ध भाव से
जो भव्य गुण चिंतन करे 'सब पाप को नशें'।।7।।

शिव शुद्ध बुद्ध नित्य निरंजन निरामयी
अकलंक चिद्स्वरूप शाश्वत सहज सुखमयी
जिनदेव के भजन से अतिशय पुण्य निधि भरूँ।
मुक्ति परम पद दीजिए यह अर्चना करूँ।।8।।

प्रभु आपके प्रभाव से फिर जन्म ना धरूँ
सम्यक्त्व के माहात्म्य से जीवन सफल करूँ।
नृप इन्द्र आदि की मुझे किंचित भी चाह ना
आतम से परमातम बनूँ बस एक कामना।।9।।

हे सूर्य! इसी हेतु से तव ध्यान धरूँ मैं
निज के लिए निज साधना में लीन रहूँ मैं

चारित्र ही पाथेय ज्ञानामृत का स्वाद लूँ
प्रभु आपसम बनूँ यही शुभ भावना धरूँ।।10।।

चौबीस जिनेश्वर शिव परमेश्वर हो ज्ञानेश्वर हितकारी।
तुम हो भवतारी पाप-विदारी, 'अभयमति' नित सिरधारी।।11।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय यंत्र मंत्र सिद्धि कराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झ्रौं वं पं हः हं झं ह्वीं हं सः अ सि आ उ सा.....नाम धेयस्य सर्व शांति कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं सिद्धिं समस्त क्षाम डामर भय विनाशनं सर्व शांति कराय रक्षापमृत्युंजाय अर्घ्यं जयमाला निर्वपामीति स्वाहा।

संत गुणों से युक्त, शुभ मृत्युञ्जय यंत्र को।
पूजें मन वच काय वे भव सागर से तिरे।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

वीरशासन दिवस को, मृत्युञ्जय सुविधान।
रचना कर प्रारंभ जब सरस काव्य पद शान।।

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, पुष्पदन्त भगवान।
ज्ञान कल्याणक के दिवस, रचना पूर्ण महान।।

गुरुओं के आशीष से रचना हुई है शान।
भूल चूक यदि हो कहीं क्षमा करो विद्वान।।

यावत जग में है सदा, जैन गुरु का वास।
मृत्युञ्जय का पाठ भी तावत करे प्रकाश।।

मृत्युञ्जय शुभयंत्र की, महिमा कही न जाय।
''अभयमती'' नित ध्यान धर झट शिवपुर को जाय।।

मृत्युंजय यंत्र की आरती

ॐ जय जय मृत्युंजय प्रिय जय जय मृत्युञ्जय।
दुखहारी सुखकारी, करे सुयंत्र विजय।।टेक.।।

जिसके सुमरन से ही डाकिन भूत पिशाच भगे।। अहो.।
भव दुख भंजन पाप निकन्दन, आतम ज्योति जगे।।ॐ।

जिसकी महिमा सुनकर, भविजन श्रद्धा उर प्रगटे।।अहो.
बीज मंत्र का ध्यान लगाकर, निज के रूप लसे।।ॐ।

जिसकी स्तुति पूजन से झट, भव बंधन टूटे।अहो.
मूल मंत्र का जप करने से, सब ही पाप कटे।।ॐ।।

एक एक अक्षर का जो भवि नित ही ध्यान धरे। अहो.
ज्ञान चेतना जगे शीघ्र ही निज के रूप करे।।ॐ।।

जो भी इसका पाठ करे है वह मृत्यु जीते।।अहो.
विघ्न रोग उपसर्ग नशे जब विषयों से रीते।।ॐ।।

मृत्युञ्जय का ध्यान धरे जो चतुर्गती छूटे।।अहो.
''अभयमती'' निज में ही रमकर पंचम गति पहुँचे।।

पार्श्वप्रभु की मंगल आरती

पारस जय पारस अतिशयकारी तुम ही हो मंगलकारी।
हम सब उतारें तेरी आरती। ओ. बाबा.....।।

विश्व सेन पितु वामा माता, के मन ही मन भायो।
काशीपुर में जन्म लियो, सुर नर मिल मंगल गायो।।
पारस, तुम हो दुर्द्धर तपधारी शिवसुख लहं आत्म बिहारी।।
हम सब.....।।

प्रभु तुम पारस मैं हूँ लोहा, लगे जंग का मेला।
जो भी ध्यान लगाते तेरा, मिटे करम का फेरा।।
वीरा तुम हो भक्तों के स्वामी, टीले के पारस नामी।
हम सब.....।।

पूर्ण विरागी बने पार्श्व प्रभु, अजब अनोखी माया।
जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाया।।
भगवन! तुम हो शिवपुर के नेता, कर्मों के पूर्ण विजेता।।
हम सब.....।।

करके श्रद्धा अपने मन में, जो तेरे दर आवे।
''अभयमती'' कहं जीव, जगत के सारे वैभव पावे।।
स्वामी तुम हो करुणा के धारी, बनकर आदर्श पुजारी।
हम सब.....।

गुरु (साधु) वंदना

मेरा नम्र प्रणाम है

जग के उन सब मुनिराजों को बारंबार प्रणाम है।
सिद्धों की श्रेणी में आने वाला जिनका नाम है।
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है।।टेक.।।

जिनका सिंह समान पराक्रम दृढ़ता धैर्य अगम्य है।
जिनका चारित्र संयम तप बल, साहस शौर्य अदम्य है।
जिन्हें मात्र मोक्षजाने का, ध्येय बनाना इष्ट है।
जिन्हें न कोई बाधक बनकर करता विघ्न अनिष्ट है।
अचल ध्यान में आत्म साधना करते जो निष्काम है।।1।।

स्तुति निंदा सुनकर के जो करते राग न द्वेष है।
हर उपसर्ग सहन जो करते, किंचित खेद न शोक है।
परम हंस निर्ग्रंथ दिगम्बर वैरागी शिवपथ है।
योगी निस्पृह शांति स्वभावी जो भय रहित महंत है।
शत्रु मित्र बन महल काच कंचन जो एक समान है।।2।।

कर ही पाणि पात्र है जिनका पृथ्वी रूपी सेज है।
तकिया भुजा दिशा वस्त्र है निर्जन धाम ही गेह है।
यथाजात है रूप मनोहर अयाचीक ही वृत्ति है।
रत्नत्रय से भूषित होकर चेतन रूप प्रवृत्ति है।
'अभय' दान देकर भी सुख-दुख लाभ-अलाभ समान है।।3।।